मुहावरे एवं लोकोक्ति

PART-5

(1). चूहे घर में डण्ड पेलते हैं — अत्यधिक दयनीय स्थिति

(2). चोट्टी कुतिया जलेबियों की रखवाली — भक्षक को रक्षक का दायित्व सौंपना

(3). जबरा मारे रोवे न दे — ताकतवर व्यक्ति का अत्याचार चुपचाप सहना पड़ता है

(4). जहाँ जाय भूखा, वहाँ पड़े सूखा — भाग्यहीन को कहीं सुख नहीं मिलता

(5). जैसी बहे बयार, पीठ तब तैसी दीजै डार — अवसर के अनुकूल बन जाना चाहिए

(6). टट्टी की ओट से शिकार खेलना — छुपकर बुरा काम करना

(7). डण्डा सबका पीर — सख्ती करने से लोग नियंत्रित होते हैं

(8). दाग़ लगाये लँगोटिया यार — अपनों से ही व्यक्ति धोखा खाता है

(9). नंगा क्या नहायेगा, क्या निचोड़ेगा — निर्धन से आर्थिक मदद की आशा नहीं करनी चाहिए

(10). नदी - नाव संयोग — थोड़े समय का साथ

(11). बिच्छू का काटा रोवे, साँप का काटा सोवे — मीठी मार अधिक बुरी होती है

(12). मेढ़की को भी जुकाम हुआ है — अपनी शक्ति से बढ़कर बात करना

(13). शेखी सेठ की, धोती भाड़े की — कुछ न होने पर भी बड़प्पन दिखाना

(14). शेरों का मुँह किसने धोया? — सामर्थ्यवान के लिए कोई उपाय नहीं

(15). इन्द्र की परी — बहुत सुंदर स्त्री

(16). बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद — किसी वस्तु का महत्त्व न समझना

(17). ओछे की प्रीति बालू भीति — निकृष्ट का साथ बहुत मजबूत नहीं होता (नीच/तुच्छ)

(18). गवाह चुस्त मुद्दई सुस्त — जिसका काम वह देर करे, दूसरे फुर्ती दिखाएँ

(19). ऊँची दुकान फीके पकवान — दिखावा - हा-दिखावा

(20). एक अनार सौ बीमार — आवश्यकता से अधिक माँग

(21). दूध का दूध पानी का पानी — निष्पक्ष न्याय (स्पष्ट बात करना)

(22). गरीबों की जोरू सबकी भाभी — कमजोर से सभी लाभ उठाते हैं

(23). जैसी करनी, वैसी भरनी — क्रमानुसार फल की प्राप्ति (जैसा करोगे, वैसा ही फल मिलेगा)

(24). खुदा गंजे को नाखून न दे — अत्याचारी को शक्ति नहीं मिलनी चाहिए

(25). कभी गाड़ी नाव पर, कभी नाव गाड़ी पर — एक दूसरे की सहायता करना

(26). एक हाथ से ताली नहीं बजती — शत्रुता दोनों पक्षों की गलती से होती है

(27). आँख के अंधे नाम नयन सुख — गुणों के विरूद्ध नाम होना

(28). अण्डे का शहजादा — अनुभवहीन व्यक्ति

(29). गुरू गुड़ चेला चीनी — गुरू से चेले का आगे बढ़ जाना

(30). आँख का अंधा गांठ का पूरा — मूर्ख धनी

(31). तीन लोक में मथुरा न्यारी — अन्य से विशिष्ट या भिन्न होना

(32). आप भले तो जग भला — अच्छे आदमी को सब लोग अच्छे ही मिलते है।

(33). दूध का जला छाछ को फूँक फूँक कर पीता है — बहुत सावधानी बरतना

(34). नाम बड़े दर्शन छोटे — प्रसिद्धि के अनुसार गुण न होना

(35). दाल भात में मुसल चंद — बीच में दखल देने वाला